

Ni tarana

आशुभ अरुणि

ASHU ARCHIVES

1.844 I

श्री. ज. हुवा ज्मा का ग. सा. ल. भा. का
को

21

दोब्बा के भातर हो क से हो हो भगर नु हुं दे
हर दो भनना आखा ल न हुं दे दोब्बा भा को का
दीक मका हो स चो हो राहा क जी हर
जी ज बुवा ज्मा को भसी ले ले भा को
हो

नमो भूयः प्रबोधयाम् ॥ ॥ श्रीलसर्लखनहाय
स्वपाल ॥ ऊः नृकाय रुट् ॥ ३ ॥ न्यास प्राप्तायाम
ः ॥ ऊः नृकाय रुट् ॥ ३ ॥ ऊँ नृगुणाखीनमः ॥ ऊँ
नृनीलीनमः ॥ ऊँ मध्यमाखीनमः ॥ ऊँ नृनामि
काखीनमः ॥ ऊँ कनिष्ठाखीनमः ॥ ऊः नृकाय रु

ट्कनगलपृष्ठाखीनमः ॥ ॥ नृनाहदयादि ॥
ऊँ हदयायनमः ॥ ऊँ निरसस्वाहा ॥ ऊँ निखाये
वोषट् ॥ ऊँ कवचाय हूं ॥ ऊँ नृगुणाय वषट् ॥ ऊ
ः नृकाय रुट् ॥ ॥ प्राप्तायामः ॥ ऊँ ऊँ ऊँ प्राप्ता
यनमः ॥ निखानाथाय विद्मह स्वस्त्यस्तु नमो महि

गन्नात्रुडः प्रचादयान् ॥ ८ ॥ ॥ लखसचक्रप्रसुलि
धन ॥ गीर्थावाहन ॥ नृकृष्णमूढा ॥ पुलायक्यानिती
धर्मिकत्रेः सृष्टानि गत्रव । गनसुधनमदव गी
धदहिदिवाकनः ॥ ॥ ऊः नृक्रायरुद्र ॥ सनृ
॥ ऊः कवचायुक्त ॥ नृवर्गुठनी ॥ धनमूढाया नृम

गीकनली ॥ क्षीरमूढाप्रदध ॥ मत्स्यमूढया नृः
हृद्य ॥ गंगचयमूनचेवल्लभदावनीसुनस्वती ॥
नम्रदसिधुकावत्रिजलस्मिंस्त्रिधीरुव ॥ धि
खानाथायविष्महस्वच्छदायधीमहि गन्नात्रुडः
प्रचादयान् ॥ ॥ नृपठितानृमुलपिवान

मित्रसिःसिचनं॥ ॥संकल्पं॥अमृकलग्नशम्र
मृकनामाममश्रीस्वष्टदवताप्रीत्यर्थंयथाभक्ति
स्नानमहंकविष्य॥ ॥स्नानसिच॥गंगमद्वारं
यागत्रगंगमसागरसंगम॥सर्वगुह्यलगांगमह
त्रिगंगमनमामुक्तं॥गंगमगीर्णगियावूयाद्याऊनानां

अनेत्रपिमृचनसर्वपापत्याविप्रलोकसगच्छति
॥ ॥हृत्॥गमयतीनमाउसस्वपालहाय॥ऊर्ला
जालि॥श्रीसूर्यायनमः॥श्रीस्वष्टदवतायनमः॥
श्रीसर्वल्लादवत्यानमः॥गिराचम्य॥ऊर्लाहाश
विप्र॥३॥गंगमसागरीय॥६॥॥॥निस्नानविधिसमाप्य॥

सन्ध्याविधिलिख्यते ॥ ॥ शिवाय नमः ॥ ज्ञां स्वाहा
३॥ ॥ नमः ॥ ऊः अमुय रुट् ॥ ३ ॥ ऊं अंगुष्ठाणी
नमः ॥ ऊं अङ्गुलीनी नमः ॥ ऊं मध्यमाङ्गुली नमः ॥
ऊं अनामिकाङ्गुली नमः ॥ ऊं कनिष्ठाङ्गुली नमः ॥ ऊः
अमुय रुट् कङ्क गलपृष्ठाङ्गुली नमः ॥ ॐ निवर्तय

सः ॥ ॥ अथ वकु नमः ॥ लिंगमूलां वक्ष्यामि ॥ ॥
ऊं ॐ नमो अय उर्ध्ववक्त्राय नमः ॥ यं तस्य त्रयाय पू
र्ववक्त्राय नमः ॥ तं त्रधा त्रयाय दक्षिणवक्त्राय नमः ॥
वं त्रामदवाय उरुवक्त्राय नमः ॥ तं सद्योजाता
यय ॥ अथ वकु नमः ॥ ॐ निवर्तय ॥ तन्मा हृदया

दि ॥ जौं हृदयाय नमः ॥ जौं मित्रसुखाहा ॥ हूं भिः
खाये वोषट् ॥ हूं कवचाय हूं ॥ जौं नृपुत्राय व
षट् ॥ ऊः नृकाय हूं ॥ ॥ लखकाया अथ अं
भा लहूं ॐ का अं ख अं ला हा ग स ग या कूर्म
मूकानता कपूरं नमः ॥ ॥ गं ला च य म न च

व (ग) दा व नि स न स्व मि न म्म द तुं ग ह ड च ऊ ल
स्मिं सं नि धि कृ तू ॥ ॥ ला हा ग चां गु लं ख न हा म
ॐ ॥ लं ख ऊ अ ला हा ग स ग स्यं न गु ना अं ॥ ऊः नृ
काय हूं ॥ ध क चा य ला हा ग सि य ॥ पु न पि ना च
म्य ॥ पु नः न्या सः ॥ क री (मे) ॥ प्रा षे य म ॥ ॥ जौं

कीं जीं प्राणायामः शिखानाथयविमहस्यहृन्दा
यधीमहि नन्नात्रुः प्रसादयात् ॥ ९ ॥ श्रावम्य ॥ प्रा
साहा ३ ॥ पूनः पासः ॥ श्रादिह्यं चमिर्वं विद्याहिः
वमादित्यत्रुपिर्षं उरुथानं नर्न नाहिर्षादित्यस्य
मिवस्य च ॥ जलजलिंदयात् ॥ ॥ ननामय

पिजायः ॥ ॥ पादपृथी नमस्कृतामि ॥ ॥ उ
मिनिप्रथिस्यहमिथिमात्रुनियोय ॥ पूनजलवि
म ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ उर्व्वज्र विष्णु रूद्र ष्ठी
धना सदाशिव ॥ शालदवथोनमः ॥ सुर्वथो
दवथोनमः ॥ सुर्वदवगाथोनमः ॥ धरुजलवि

यस्य ॥ ॥ सनकश्च सनन्दश्च तृतीयश्च सनातनः
न कपिलश्च सतिष्ठेव वातुर्पञ्चः सितवक्त्रधाम् ॥ य
मदमिः कौशिकश्चैव सनत्कुमारो वसिष्ठकः
दिव्यमूर्तिर्देवदत्तश्चैव दत्तवर्मा ॥ न सर्व
हृदि माया तु न दहति नाम्ना सदा ॥ ॥ अथ कौशिक

यस्य चिन्तनी विलानमः ॥ ॐ आदिदक्षलोकपाल
लानमः ॥ आदित्यादिनवग्रहलानमः ॥ प्रतियदा
दितिथिलानमः ॥ अश्विन्यादिनक्षत्रलानमः ॥ ३
विष्णुर्गदित्यागलानमः ॥ मन्वादिद्वादशनाभिलान
नमः ॥ ववादि कनकलानमः ॥ मित्रादिमूर्तलान

मः॥ त्रात्मदवयानमः॥ सर्वलोकदवयानमः॥ स्वः
वृद्धवयानमः॥ ॥ पूर्ववन्मः॥ आचम्य॥
कांस्त्रिहो३॥ विष्णु३॥ ॥ पितृतर्प्यमात्मन
याधर्मेयशत॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
जातिभक्तमिश्रकथं भगवत्समायुक्तं

सम्यत् १८६॥ तानमितिमाद्यवदि ३० सम्यत् २३३
मिति यौषकेण प्रमावास्यानेधो सोमवारे तस्मि
न्दिने श्रीगुरुवाचमुदेव एव ॥ पुठितो कश्चिनी वना
एव एव शर्मा या प्रन्यासदिक्षा काया याति दोषी
जगन्नाथप्रतिहर् १३ ब्राह्मणी हर् ६ नौमिहर् २३॥

जम्मास्री ४२ जुल ॥ धुगुवेलसथ्वस्य फूलीस
निलया श्री श्री नाथ रामन त्रानादि पूजानित्यक
स्रसकतींदयक वाया श्री नाथ लुया देवशरा
मसुन्दर यात बोस विद्या जुल ॥ थ्वस्य फूलीनान
सायमते श्री केने मते श्री कन्यमते श्री जुल शुभ ॥

ॐ नमः श्री चण्डिकाय ॥ ॐ नमः श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ दव
वाच ॥ देवदेव महादेव ॥ ॐ नमः श्री कृष्णाय नमः ॥ ॥ देव
दान्मया देव ॥ नमः श्री कृष्णाय नमः ॥ १ ॥ किमु कृष्ण
वक्ष्यं नमः श्री कृष्णाय नमः ॥ २ ॥ नमः श्री कृष्णाय नमः ॥
लदानरुर्वमिहि ॥ २ ॥ नमः श्री कृष्णाय नमः ॥

नववल्गु॥ ॥महादेव उवाच॥ नरुस्मानि नरुस्यं न
नकस्मेचित्सुकाशिनं॥ ३ ॥ अगीवमत्पियासीतित्वया
कथं नचास्मि॥ मंगसिद्धिकर्तृ ननु कार्यसिद्धिकर्तृ
नथ॥ ४ ॥ कस्याहिरात्रदायघ्नं महाभक्तिकर्तृपतं
॥ त्रेत्रिपदेकक्षमनं महाविरुद्यदायकं॥ ५ ॥ यस्यः

प्रसादादीक्षमहं नवानातुसंक्षयः॥ वृक्षविप्रसून
न्यायाः स्वीर्त्वांसिद्धिप्रयदिनं॥ ६ ॥ कथयामि साव
धानाहत्वाष्टसूत्रं ध्वनिं॥ ॥ ॐ अस्य श्रीसर्ववि
द्यामहानाष्टीकृत्तिदवीवज्रयंजनकवचस्य महा
वामदेवमभिमतं कुक्ष्यावस्थितं पिलीकृत्तिकादवगा

ध्वं ङाकिरुं कीलकं मसनवात्मादिसकलमयसि
द्विप्रवर्कधर्मोत्थकामभादात्थजयविनिधागः॥ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ सम्य
रुपायुभनयं महाकालश्च नासिकी ॥ ०० ॥ मिऽव्याकृ
युगलंगालीपायुजलाधियः ॥ ८ ॥ दत्तपंकियुगपा

उसदाभद्रगहकनः॥ तसनाभसदापायुयवनः प
तमध्वनः॥ ९ ॥ नृधीनः चिवर्कनद्रुदिद्रुविद्रुवि
रूषिगः॥ वदनीसकलपायुसर्वदानचतुष्टय
॥ १० ॥ अङ्गिकालीसदापायुनीकलदणक
॥ कलान्तःपायुभनिर्यसुवदयौचूर्ज ॥ ११ ॥

पपंचमः सदा पाठु सुनंदं दुर्नामकं ॥ पाठु पाठु
 सदा पृष्ठी पृष्ठं पांथी सदा वतु ॥ १२ ॥ कलनः पाठु
 हस्तो मपवन मुक नां गुलीः ॥ देवी कामकला पाठु
 नाहि दक्षिण ॥ दनं ॥ १३ ॥ ज्ञान च त्रपिली देवी स
 वृतः यमि ॥ ज्ञान च त्रपिली देवी नवा सा सर्व

दा वतु ॥ १४ ॥ ज्ञान च त्रपिली देवी नवा सा सर्व
 का ॥ कटि दक्षिण सदा पाठु ॥ ज्ञान च त्रपिली देवी सदाः मम ॥ १५ ॥
 उन्म सर्व दान दक्षिण काम लभ्य कृष्णिका ॥ जाननी
 सग तं नक्षत्रा दक्षिण सदा मम ॥ १६ ॥ ज्ञान च त्रपिली देवी नवा सा सर्व
 कृष्णिका जय कृष्णिका तु गुल्लकं ॥ सां गुली च त्रपिली देवी सदा सर्वदा

वधकृति

कृति

सिद्धकृतिपाठुदात्राभपाठु

सदास्यादिकंचयत्

संकटमात्रिली॥ श्री

रावतु॥ १२॥ ००

कल्यङ्क

का
पाइका

वप्रता
नयनाइकीपूजया
॥ उँसिहासनायपादू
जंयामि ॥ उँगुक्कचन
चन्दनाकगपूर्यनमः ॥ ॥

उर

ॐ निदवत्रासनं ॥ ॥ पूर्ववक्तमूलनध्वनदवक्त ॥ पूनः मूल
नययलिं ॥ उँगुक्ककुक्कध्वननन्दनाथगुक्ककुक्कध्वनीध्वः
किमहितायपत्राम्बापाइकीपूजयामि ॥ त्रियाकुलिपूर्यन
मः ॥ त्रिवानं ॥ ३ ॥ इदयादिदवक्तवलिययंगनं ॥ ॥
उँरुहदया ॥ ॥ स्वाहा ॥ उँकभिनसः

ब्रह्मा ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥
यकवचाय नमः ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥
ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥
नृथ हट्ट कादि ॥ ॐ हट्ट कादि पादुकी पूजयामि ॥ ॐ देवलि ॥
ॐ प्रयागदि पादुकी पूजयामि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥

दिपादुका पूजयामि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥
पूजयामि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥
नाथ श्रीवृद्धि कं धत्री भक्ति सहि नाथ यनो म्बा पादुकी
पूजयामि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥ ॐ देवलि ॥
॥ नृथ पाशाद कं न पायादि ॥ ॐ पाशाद कं न पायादि ॥ ॐ पाशाद कं न पायादि ॥

नृधं स्वाहा ॥ श्रीं चन्दनसिन्धुत्रं वोषट् ॥ **स्तुतुं नृकर्मकं** ॥ को
पूर्ववषट् ॥ ॥ नमो नमो यदिसूत्रं नजोपः मलुलं कार्य
॥ ॥ उंजमिगुनाथयविद्यहं सिद्धिनाथयधीमहि न
नालकीः पुत्रादयात् ॥ १० ॥ ऊर्ध्वं समर्पयामि ॥ यानिः
मूर्धादधयत् ॥ ॥ **केशलकार्यकागुगयाय** ॥ ॥ ॥

उं नमः **भक्तिकार्य** ॥ उंजमिगुनाथयविद्यहं सिद्धिनाथयधीमहि न
नमो नमो यदिसूत्रं नजोपः मलुलं कार्य
नान्ययकी ॥ चत्वारः पंचका न्यूनः नपिचतुर्न नरुगाम
लुलं संसृष्टं यन नस्तेनमतगुर्वनं हेनर्वशीकृजं
उंकायासनमावृत्तं वक्रपद्मापनिहिकीः वद्युकावगती

दवीं श्रीकृष्णकी नमामहे ॥ ॐ उक्तालीकमलनू सोम्यत
दनीमाह धत्रीलिनया कोमानिनिपुद्वर्षनामनक
नीचकायूधावे प्रवी वाताही धनधात्रघर्षत्रम
खीचे नुचवजायूधा चामूलागलनाथहेनवग
अनकनुमीमाहकाः ॥ ॐ सर्वमंगलमांगल्यमिव

सर्वार्थसाधक अनन्तगुणविक्रमेरी नारायणी न
माम्नुग ॥ जूगगन्धर्वनविष्णो गत्सर्वविधिपति
पूर्णमनु ॥ नमस्तु नाराय ॥ ॥ श्रीगिरीदत्ता
नमः ॥ ॐ पूर्य नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॐ यागिलीच
कमध्वरु माहमधुलवधिरुगं ॥ नमामिभिनसा

नार्थं स न वं स न वी प्रियं ॥ ॥ नृचपायसुलातथूस्य
वलिकं गल गन मिखापिय ॥ मालस वांगुस्वानलि
काया अन तु स्य वाय ॥ ॥ आत्मा लिङ्ग कं ॥ ॐ आत्मा
प्रसिंचन नमः ॥ ॐ आत्मान चन्दन सिन्धु नमः ॥ ॥
मधुलसस्वानंद वरु ध्यान गया तु स्वानं काया अ नृ

चपायसुथू नाजान ॥ ॥ ॐ नृम्भ पूर्व ग नं यद ह ग व
मी चै य न नृपा सि का क्लान्ता वक्रला गथा ह नि ह न
वक्रामनी चिय र्य हास्व हे न व य च कं ग नृ ग नं श्री
आ गिली यं च कं चन्द्रा क्ता मिमनी चि वक्र म म ली मा
पा तु निर्यं क्ता ॥ स्वन क्थं ॥ ॥ पूर्व व नृपा स लिङ्ग

य॥ ॥ गालय च स चांगुस्वानकास्य नूर्ध्वयाव सग य॥
 उं गंधी कल च लुग्ध ना नन्द नाथा य कल च लुग्ध नीम
 किस हि ना म पादू की पूजया मि॥ ००० द वलिं ग क र
 स्वाहा ॥ ॥ गालय च ॥ उं नूर्ध्वयाव नूर्ध्वयाव ॥ ॥ सी
 हा न मूर्ध्वयाव ॥ उं [REDACTED] च लुग्ध ना य कू रू रू स्वा

हा ॥ ॥ वलिस्थाय वलिसुल्लखन पूजा हलहिलक
नासिया ॥ ॥ नुं ह्या हा ॥ ॥ नुं जभी कुडि कं धनान नन
थभी कुडि कं धनानी कि सहिताय पूजि गति क म ह्य
॥ क ग्य लुल्लखना हिलका न न ॥ २० ॥ अथ क ग्य ल
पूषा लकी य पत्रि वान पूजा या य ॥ ॥ ॥ नुं ज ह व सहि

नहवानीपाइकीपूजयामि॥ॐ हनसिद्धिप्रदवल्खा
पाइकीपूजयामि॥ हनिहंभनायपाइकीपूजयामि
॥ॐ जमीकृत्तिकादव्यपाइकीपूजयामि॥ॐ वाना
हीदव्यपाइकीपूजयामि॥ हां हनूमनायपाइकीपू-
जयामि॥ॐ कीं सिद्धिलक्ष्मीदव्यपाइकीपूजयामि॥

ॐ सनस्येपाइकीपूजयामि॥ गंगायनायपाइकी
पूजयामि॥ कीं दामादनायपाइकीपूजयामि॥ॐ श्री
गुरुलक्ष्मीपाइकीपूजयामि॥ ॥ स्तुतं ॥ सर्वमंग
लमंगल्यभिवसुर्वार्थसाधकं अनन्यविश्वकर्म
नी नानायलीनभामुने ॥ ॥ स्तुतं कायाकृत्य ॥ ॥

ॐ हवसहि गह्वानी पूजिता सिद्धमस्य ॥ ॥ सूर्यः
साक्षि ॥ मण्डलाधिल ॥ हवस्यः स्वात्मयसूर्यमूर्तये न
मः कांकीसः सूर्याय नमः कर्मकर्मसाक्षि ॥ श्री सूर्य
सूर्याय नमः पूर्व्यनमः ॥ ॥ नाहिय ॥ त्रैलोक्य ॥
२ ॥ विष्णु ॥ ॐ निमूलनिर्वाचनसमाप्तम् ॥ ॥

अथ सूर्यपूजा ॥ ॥ त्रिभुवनस्वायस्वाहा ॥ त्रिविद्यागस्वाय
स्वाहा ॥ त्रिआत्मगस्वायस्वाहा ॥ ध्याननाहिय ॥ ॥ आसं
मः ॥ त्रिआत्मन ॐ दमासने नमः ॥ त्रिआत्मन पूर्व्यनमः ॥
नमः ॥ नः त्रिआत्मन ॐ ॥ विष्णवे ॥ त्रिदयाय नमः ॥
त्रिआत्मनि सस्वाहा ॥ ॐ हवस्यः स्वात्मयसूर्यमूर्तये नमः ॥

षट् ॥ हं कवचाय हुं ॥ लो न ग उ या य व षट् ॥ नः श्रुताय रु
ट् ॥ हृदयादि न न श्रु च या य पूजा ॥ ॥ श्री लक्ष्मी ॥ श्री
लक्ष्मी च नमः ॥ श्री लक्ष्मी च नमः ॥ श्री लक्ष्मी च नमः ॥ श्री लक्ष्मी
च नमः ॥ ॥ श्री लक्ष्मी ॥ हं खं खः खाल्काय सूर्य्य मू
रु य नमः ॥ कौं कौं सः सूर्य्य य नमः ॥ श्री लक्ष्मी च नमः ॥

नमः ॥ ॥ पूनर्वा नंद वस्तु नंद य यांजलि ३ ॥ हृदयादि
॥ नंद य वलि ॥ उं या गि ल्मा ही वल नृदा वना लं व स म
विना ग्राह नार्थ कु म द रुं प्र नि गृ क्तु म व लि ॥ श्री लक्ष्मी
च नमः ॥ ॥ श्री लक्ष्मी ॥ ॥ श्री लक्ष्मी ॥ श्री लक्ष्मी
च नमः ॥ ॥ श्री लक्ष्मी ॥ श्री लक्ष्मी ॥ श्री लक्ष्मी ॥

आदयान् ॥ १० ॥ ऊर्यसमर्पयामि ॥ पद्ममूर्तीदधयामि
 ॥ स्कार्य ॥ ऊवाकसुमसंकार्यकाष्ठपर्यमहायुग्मिं ॥ न
 भानिं सर्वपापघ्नं पुल्लमामिदिवाकर्तुं ॥ नमस्कार्य ॥
 दवाभिर्वादं ॥ नमः ॥ न्यासलिकाय ॥ चतु
 पूजा ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

नवलिप्तम् ॥ नासिय ॥ ॥ ॐ निसूर्यपूजा ॥ १ ॥
 न ॥ नानायलपूजा ॥ ॥ आचम्य ॥ कीं प्रथमं न त्वाय स्वा
 हा ॥ कीं प्रथमं न त्वाय स्वाहा ॥ कीं ॐ न त्वाय स्वाहा ॥ न
 सन ॥ कीं आत्मन ॐ दमासनं नमः ॥ कीं आत्मन पूष्य
 नमः ॥ ॥ आसः ॥ हं नमः दिकादिफपह नः क्रायरु

की हं हं ॐ हं मिदं वलिं गृह्णान स्यात् ॥ हव्यं नैव यनः
नमः ॥ कव्यं नैव यनमः ॥ ॐ निवलि ॥ ॥ जापः ॥ की
विष्णु नृपाय विष्णु हं विष्णु गिरिनायकी महि न न्ना विः
प्रः प्रचोदयात् ॥ १० ॥ जयं समर्प्य आनि ॥ वां स्वप्नादि
दर्शयत् ॥ ॥ स्तोत्रः ॥ यस्य हस्य गदा चक्रं गमूढा ज

स्य वाहनं सप्तकनाशुकल्या नैय यन्नाराज नार्दन
॥ ॥ आभिर्वाद स्नानं ॥ कीं प्रसन्न नमः ॥ न्यासस्तिका
य ॥ नृप पाश्या स्नान वलिसुग ॥ कीं वां विष्णु न
अर्कं रुद्र स्नाहा ॥ ॥ नासिय ॥ ॐ नि नाना य ॥ रजा
॥ ॥ नृप सदा निव प्रजा ॥ ॥ नासिय ॥ हों निव न

स्वायस्वाहा ॥ ह्रीं विद्या न स्वायस्वाहा ॥ ह्रीं आत्म न स्वायस्वा
हा ॥ ॥ ह्रीं आत्म न हृदमासर्जनमः ॥ ह्रीं आत्म न प्र
नमः ॥ ॥ न्यासः ॥ हः श्रुमाय रुट् ॥ ह्रीं हृदयाय न
मः ॥ ह्रीं भिनस स्वाहा ॥ ह्रीं भिखाय वीषट् ॥ ह्रीं कवचा
य ह्रीं ॥ हः श्रुमाय रुट् ॥ ॥ न न हृदयादि नृर्घषण

॥ नृर्घषण पूजा ॥ नृर्घषण दक्ष नृर्घषण ॥
ह्रीं आत्म न विचर्जनमः ॥ ह्रीं आत्म न च ॥ ह्रीं नृ
मः ॥ ॥ नृर्घषण ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं भिवमूर्धय नमः ॥ ह्रीं भि
वाय नमः ॥ आत्म न ध्यान पूष्य नमः ॥ ॥ पूष्य
नद वरुण थन प्रयी जलि ॥ हृदयादि पूजन ॥

